



# भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण  
EXTRAORDINARY

भाग I—खण्ड 1  
PART I—Section 1

प्राधिकार से प्रकाशित  
PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 194]  
No. 194]

नई दिल्ली, सोमवार, अगस्त 21, 2006/श्रावण 30, 1928  
NEW DELHI, MONDAY, AUGUST 21, 2006/SRAVANA 30, 1928

गृह मंत्रालय

MINISTRY OF HOME AFFAIRS

अधिसूचना

NOTIFICATION

नई दिल्ली, 21 अगस्त, 2006

New Delhi, the 21st August, 2006

सं. 3/4/2006-पब्लिक.—भारत सरकार अत्यन्त दुःख के साथ यह घोषणा करती है कि उस्ताद बिस्मिल्लाह खान का दिनांक 21 अगस्त, 2006 को वाराणसी, उत्तर प्रदेश में निधन हो गया है।

No. 3/4/2006-Public.— The Government of India announce, with profound sorrow, the death of Ustad Bismillah Khan on 21st August, 2006 at Varanasi, Uttar Pradesh.

विनोद दुग्गल, गृह सचिव

V. K. DUGGAL, Home Secretary

## अधिसूचना

नई दिल्ली, 21 अगस्त, 2006

## NOTIFICATION

New Delhi, the 21st August, 2006

## निधन सूचना

सं. 3/4/2006-पब्लिक.—उस्ताद बिस्मिल्लाह खान का 21 अगस्त, 2006 को वाराणसी में निधन हो गया है।

2. उस्ताद बिस्मिल्लाह खान का जन्म 21 मार्च, 1916 को डुमराँव, बिहार में पारम्परिक शहनाई वादक परिवार में हुआ। आप वाद्य संगीत की हिन्दुस्तानी शैली के अग्रणी शहनाई वादक थे। आपने संगीत का प्रशिक्षण अपने मामा वाराणसी के स्वर्गीय अली बक्श से प्राप्त किया। आपने अपना पहला सार्वजनिक कार्यक्रम 14 वर्ष की उम्र में 1930 में इलाहाबाद में आयोजित अखिल भारतीय संगीत सम्मेलन में प्रस्तुत किया। वर्ष 1937 में कोलकाता में आयोजित अखिल भारतीय संगीत सम्मेलन में तीन स्वर्ण पदक जीतने पर आपको प्रतिभा सम्पन्न संगीतकार के रूप में प्रसिद्धि मिली।

3. उस्ताद बिस्मिल्लाह खान ने भारत के प्रथम गणतंत्र दिवस के अवसर पर लाल किले की प्राचीर से अपने बेजोड़ शहनाई वादन से श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया था। प्रतिष्ठित शहनाई वादक के रूप में अपने दीर्घ एवं गरिमामय करियर के दौरान आपने शहनाई को अभूतपूर्व ऊँचाईयों तक पहुँचाया और पूरे विश्व में लगभग प्रत्येक देश की राजधानी में अपनी शहनाई वादन कला का प्रदर्शन किया। आप मानवता एवं सादगी की प्रतिमूर्ति थे। आपको किसी भी तरह का बाह्याडम्बर या दिखावा पसन्द नहीं था।

4. आपके आकर्षक एवं समृद्ध प्रदर्शन के लिए आपको 1956 में संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार, 1961 में पद्म श्री, 1968 में पद्म भूषण, 1980 में पद्म विभूषण, 2001 में मध्य प्रदेश सरकार के तानसेन पुरस्कार और भारत रत्न से सम्मानित किया गया। आपको बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय एवं शान्तिनिकेतन द्वारा मानद डाक्टरेट की उपाधि प्रदान की गई।

5. उस्ताद बिस्मिल्लाह खान के निधन से भारतीय संगीत को ऐसी क्षति पहुँची है जिसकी लंबे समय तक भरपाई नहीं की जा सकेगी।

6. उस्ताद बिस्मिल्लाह खान अपने पीछे पांच पुत्र एवं तीन पुत्रियाँ छोड़ गए हैं।

## OBITUARY

No. 3/4/2006-Public.—Ustad Bismillah Khan passed away on 21st August, 2006 at Varanasi.

2. Born on 21st March, 1916 at Dumraon, Bihar in a family of traditional Shehnai players, Ustad Bismillah Khan was the foremost Shehnai player of the Hindustani system of instrumental music. He received training in music from his illustrious maternal uncle late Ali Bux of Varanasi. His gave his first public performance in 1930 at the age of 14 in an All India Music Conference at Allahabad. He was acclaimed as a talented musician in 1937 when he won three gold medals at the All India Music Conference at Kolkata.

3. Ustad Bismillah Khan enthralled the audiences with a sterling performance from the ramparts of Red Fort on India's first Republic Day. During his long and illustrious career as an acclaimed Shehnai maestro, he took the Shehnai to unprecedented heights and gave performance in almost every capital city across the world. He was an epitome of humility and simplicity. He loathed glamour and ostentation in any form.

4. For his scintillating and enriching performances, the legendary maestro was decorated with the Sangeet Natak Akademi award in 1956, Padma Shri in 1961, Padma Bhushan in 1968, Padma Vibhushan in 1980, Tansen award from the Government of Madhya Pradesh and Bharat Ratna in 2001. He received honorary doctorates from the Benaras Hindu University and Shantiniketan.

5. Ustad Bismillah Khan's demise has left a void in Indian music which will remain unfilled for a long time.

6. Ustad Bismillah Khan is survived by five sons and three daughters.

विनोद दुग्गल, गृह सचिव

V. K. DUGGAL, Home Secretary